5

सदा ढाढ़स बांधे रहो

(2 कुरिन्थियों 4:8-5:10)

''हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं''(5:7)।

पुराने बुलेटिनों और रिकॉर्डों का इस्तेमाल करते हुए मुझे अपनी स्थानीय मण्डलियों का इतिहास लिखना हो तो एक बात व्यावहारिक रूप में सम्भवतया हर कलीसिया में आम पाई जाएगी। हमारे रिकॉर्डों से नई सेवकाइयों के बड़े जोश के साथ आरम्भ होने और फिर जोश ठण्डा पड़ जाने पर हमारे ''दिल छोड़'' का नूमना ही मिलेगा। उदाहरण के लिए बस से सेवकाई और घर-घर जाना, से पहली बार घोषणा किए जाने के बाद अधिक सेवकों को आकर्षित कर सकते हैं। परन्तु केवल कुछ लोगों के रह जाने तक स्वयंसेवक कम हो जाते हैं। जब महत्वपूर्ण सेवकाइयों पर छोड़ जाने का नमूना बन जाता है तो हम किसी भी सेवकाई की सम्भावनाओं के बारे में उदास हो जाते हैं।

इस नमूने ने कई योग्य लोगों को कई वर्षों के विचार के बाद कि वे बदलाव लाएंगे, ''जलाकर नष्ट कर दिया'' है। वास्तव में मेरे ध्यान में कलीसिया की कई सेवकाइयों में से कोई क्षेत्र नहीं आता, जहां निराशा बड़ी समस्या न हो। बस की सेवकाई और घर-घर जाने के कार्यक्रम में इंचार्ज बनाए गए लोग अपने काम में और स्वयं सेवकों के नाम लिखने की कोशिश के बढ़े हुए समय के बाद ''दिल छोड़ जाते'' हैं। संडे स्कूल टीचर की दिनचर्या वर्षों तक एक ही रहती है। ऐल्डर और प्रचारक आसानी से उस काम में थक जाते हैं, जिसमें उन्हें लगता है कि परेशानियां तो खत्म ही नहीं होतीं। हम में से कई लोग यह सोचकर कि वे ''बदलाव लाएंगे'' आते हैं, पर बाद में हमें नहीं लगता कि हम कर पाएंगे। मेरा मानना है कि हमारी सेवकाइयों को खतरा अच्छे विचारों या योग्य लोगों की कमी नहीं है। हमारी समस्या यह है कि हम ''जलकर नष्ट हो जाते'' हैं।

यदि हम ईमानदार हैं तो मान लेंगे कि कलीसिया की कई सेवकाइयां निराश करने वाली हैं। संडे स्कूल टीचर के लिए यह देखना कठिन है कि वह बदलाव ला रहा/रही है या नहीं। पुलपिट मिनिस्टर के पास यह जानते हुए कि वह एक ऐसे समाज में रहता है जिसे हर चीज़ को नापना अच्छा लगता है, कुछ ही नापने योग्य सफलताएं हैं। आप बदले हुए जीवनों को कैसे नापते हैं? आपको कैसे मालूम है कि कलीसिया को बनाने में आपका प्रयास निर्णायक था? उन कलीसियाओं में भी जो गिनती में काफ़ी बढ़ी हैं, आत्मिक विकास को नापना आसान नहीं है। हमारी सफलताओं को मापना आसान नहीं है। इस कारण हम दिखाई देने वाले प्रमाण की मांग करते हैं कि हमारे काम से बदलाव आया है। अपनी सफलता को दिखाने के लिए हम नये शिक्षा के केंद्र, कर्ज़ मुक्त भवन और लोगों की उपस्थिति की ओर ध्यान दिलाते हैं।

निराश होने का अर्थ ''दिल छोड़ना'' है। RSV में इस शब्द का इस्तेमाल 4:1, 16 में हुआ है। यह सुझाव देने के लिए हमारी मण्डलियां ''दिल छोड़ देती'' हैं तो वे अकेली नहीं होतीं नये नियम में इस शब्द (*egkakein*) का इस्तेमाल काफी बार हुआ है। नये नियम में दिल छोड़ने के विरुद्ध दी गई बार-बार सलाह से पता चलता है कि मसीही लोग हमेशा निराश हो जाते हैं। हठी विधवा, का जिसने अधर्मी न्यायी के सामने विनती करना छोड़ने से इनकार किया, यीशु का दृष्टांत चेलों को प्रोत्साहित करने के लिए था: ''इसके विषय में कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए उन से यह दृष्टान्त कहा'' (लूका 18:1)। स्पष्टतया उसने यह दृष्टांत इसलिए बताया क्योंकि परमेश्वर के राज्य के आने के लिए चेलों को प्रार्थना बिना परिणाम के लग रही थी।

आमतौर पर पौलुस मसीही लोगों को ''दिल न छोड़ने की सलाह'' देता है। उसने गलातियों (6:9) और थिस्सलुनीकियों (2 थिस्सलुनीकियों 3:13) दोनों को ''भलाई करने में साहस न छोड़ने [*egkakein*]'' के लिए कहते हुए लिखा। इफिसियों को पौलुस के कष्ट के कारण ''हियाव न छोड़ने'' को कहा गया था। इसलिए पौलुस को मालूम था कि सेवकाई में ''हियाव छोड़ने'' की परीक्षा का सामना करना पड़ता है।

2 कुरिन्थियों में दो अवसरों पर पौलुस कहता है, ''हम हियाव नहीं छोड़ते'' (4:1, 16)। यह तथ्य कि पौलुस इस कथन को दोहराता है, सुझाव देता है कि कुरिन्थियों के साथ अपनी चर्चा में यह उसके लिए विशेषतया महत्वपूर्ण था। स्पष्टतया पौलुस को उन्हें उत्तर देना था जो उसकी सेवकाई को चुनौती दे रहे थे और सुझाव दे रहे थे कि उसे हतोत्साहित किया जाए! उसकी निर्बलता, उसकी भंजनशीलता और उसकी कई पराजयों का अर्थ यह होना चाहिए कि वह अपने आप में एक हारा हुआ आदमी है! मानवीय मापदण्डों से उसकी सेवकाई एक असफलता थी। हमें नहीं मालूम कि कुरिन्थुस की कलीसिया कितनी बड़ी थी, पर हम इतना जानते हैं कि यह परेशान करने वाली और विद्रोही कलीसिया थी। जब विरोधियों ने देखा कि पौलुस ने अपने आपको यहां तक समर्पित किया हुआ है कि उसका स्वास्थ्य भी गिर रहा था और सफलता का कोई चिह्न भी नहीं था, तो उन्होंने दावा किया कि वह उपहासजनक व्यक्ति है जिसका शरीर ''नष्ट होता जाता है'' (4:16) जबकि उसने अपने आपको एक हारे हुए उद्देश्य के लिए दिया।

निराशा के आगे हार मानने से कोई कैसे बचता है? यह दावा करने वालों को कि पौलुस ''हियाव छोड़'' देना चाहिए उसके उत्तर हम में से उन लोगों के लिए लाभदायक होंगे, जो पौलुस की तरह अपनी दिखाई देने वाली सफलता को आसानी से नाप नहीं सकते। 4:16-5:10 में पौलुस कारण बताता है कि दूसरों द्वारा थोपी गई सफलता के मापदण्डों को नापे बिना उसने अपनी सेवकाई जारी क्यों रखी।

हम उन चीज़ों को नहीं देखते जो दिखाई देती हैं (4:16-18)

ऊपर से तो पौलुस के पास ''हियाव छोड़ने'' के कारण थे। उसका ''बाहरी मनुष्यत्व नष्ट होता जाता'' था (4:16)। हार मानने का एक सम्भावित कारण निरन्तर ''कष्ट'' था। कई लोगों के अनुसार यह इस बात का प्रगटावा था कि वह एक असफल व्यक्ति है। 2 कुरिन्थियों की पूरी पुस्तक में पौलुस की शारीरिक दुर्बलता और कष्ट मुख्य मुद्दा रही है (तुलना 4:7, 8)। वह

यीशु मसीह के लिए हमेशा ''मर रहा'' ही है (4:10, 11; तुलना 1 कुरिन्थियों 15:31; रोमियों 8:36)। सेवकाई जिसके लिए उसे बुलाया गया है ने उसे मानवीय अर्थों में निराश होने का हर कारण दिया है।

कोई ''हियाव छोड़ने'' से नाकाम कैसे हो सकता है जब उसके प्रयास किसी दिशा में न जा रहे हों? हम में से अधिकतर लोग असुविधा और पीड़ा को सहन कर सकते हैं यदि हमें विश्वास हो कि हमारे काम के परिणाम मिलेंगे। जब कोई भविष्य दिखाई न दे तो हम हाथ खड़े कर देना चाहते हैं। शायद कलीसिया में हमारे कई प्रयासों पर लटक रही तलवार तभी गिरती है, जब हमें अपने बलिदानों का मोल मिलता दिखाई नहीं देता।

विश्वास की दृष्टि से, पौलुस बलिदान और परिणामों में सम्बन्ध को इस तरह से देख पाया जिससे उसे प्रोत्साहन मिला। ''नष्ट होना'' और कष्ट ''बाहरी मनुष्यत्व'' यानी शारीरिक देह तक सीमित थे (तुलना 12:9 से)। अपने काम और दूसरों द्वारा दी गई पीड़ा के तनाव से उसकी काया कमज़ोर होती जा रही होगी, परन्तु उसका वास्तविक व्यक्ति गर्म और बेचैन रातों से नष्ट नहीं किया जा सकता था। पौलुस ने इस बात को समझा कि उसके कष्ट ''पल भर के'' (*elaphron*) और ''हल्के'' (*parautika*) थे। पहला शब्द सुझाव देता है कि उसके कष्ट उस महिमा की तुलना में जो अनन्तकाल तक रहती है महत्वहीन है। यानी कष्ट परिणामों के अनुपात में बहुत कम है क्योंकि उसके काम के अनन्त परिणामों की तुलना में कष्ट महत्वहीन हैं।

कोई भी जो किसी कठिन कार्य में लगा हो उसने यह महसूस किया है कि यह वह कार्य ''सदा तक रहने वाला'' था। किसी व्यवसाय को सीखने के लिए स्कूल जाने के सुख सुविधा से वंचित रहने से पहले तो लग सकता है कि खत्म ही नहीं होंगे। जब मैं कॉलेज में था उस समय की गर्मियों में किए जाने वाले कठिन काम मुझे स्मरण आते हैं, जो मुझे लगता था कि कभी खत्म नहीं होंगे। अब कई साल बीत जाने के बाद मैं देखता हूं कि वे गर्मियां कितनी छोटी थीं। ऐसा दृष्टिकोण पौलुस को निराश होने से रोकता है। वर्तमान के कष्ट ''महिमा के सनातन भार'' की तुलना में कुछ भी नहीं है। वास्तव में वर्तमान की पीड़ा केवल अनोखा लगने वाला आतंक ही नहीं है। यह ''हमारे लिए'' महिमा का अनन्त भार ''बनाने वाला'' है। हमारे सेवकों के सफलता के मापे जा सकने वाले योग्य चिह्न नहीं मिलते; हमारी स्पष्ट असफलताएं हमें वास्तविक परिणामों के लिए तैयार करती हैं, जिन्हें हम इस समय नहीं देख सकते।

भविष्य में इस विश्वास ने पौलुस की सेवकाई को बनाए रखा। रोमियों के नाम उसने पौलुस को लिखा, ''क्योंकि मैं समझता हूं कि इस समय के दुख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं'' (रोमियों 8:18)। उसने पूछा:

> कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नङ्गाई, या जोखम, या तलवार? जैसा लिखा है, कि तेरे लिए हम दिन भर घात किए जाते हैं; हम वध होने वाली भेड़ों की नाईं गिने गए हैं (रोमियों 8:35, 36)।

भविष्य में उसके यकीन ने उसे बिना निराश हुए आगे बढ़ने का भरोसा दिया।

यदि हमारी मण्डलियों का इतिहास ऐसे कार्यक्रमों वाला है, जो नाकाम रहे और ऐसे अगुवों वाला है, जिन्होंने ''हियाव छोड़ दिया,'' तो यह सम्भावना है कि हम अपने समय की अधीनता

के शिकार हों। कोई मानसिकता जिसका यह कहना है कि तुच्छ परिणामों के लिए यह बलिदान बहुत बड़े हैं। उसने भविष्य की पौलुस की बड़ी तस्वीर को समझा ही नहीं। यह साबित करने के लिए कि हमारे कार्यक्रम ''सफल हो रहे'' हैं, तुरन्त परिणामों की मांगों की हमारी मांग इस बात का संकेत है कि हमारी कमी है। ऐसी सोच में खतरा है जो यह सफलता के दिखाई देने वाले चिह्नों की मांग करती है। इसके विपरीत पौलुस का भरोसा दिखाई न देने वाले उसके आश्वासन से बना था:

''और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं'' (4:18)।

पौलुस की सेवकाई के आलोचना करने वाले लोगों ने केवल ''बाहरी मनुष्यत्व'' को नापा था और वे देख सकते थे कि यह हर प्रकार से अप्रभावी है। परन्तु इस सेवक की कोई बात ''दिखाई नहीं'' दी थी और उसे नापना असम्भव था। ''भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता'' जा रहा था (4:16)। महिमामय भविष्य के बारे में अपने विश्वास से पौलुस प्रोत्साहित और दिलेर ही नहीं हुआ था। उसका मसीही जीवन किसी कष्टदायक अग्नि परीक्षा अनुभव से कहीं बढ़कर था, जो उस भविष्य के आरम्भ होने से उसे चूर कर दे। 4:16 में ''दिन प्रतिदिन'' होने वाली बात पर ज़ोर दिया गया है। ''बाहरी मनुष्यत्व नाश'' होने के समय ही ''भीतरी मनुष्यत्व'' नया होता जाता है। पौलुस को मालूम था कि मसीही जीवन में एक अदृश्य और महिमामय भविष्य से कहीं बढ़कर यानी इसमें महिमामय वर्तमान भी अदृश्य है। जो लोग मापने योग्य परिणामों और दिखाई देने वाले चिह्नों पर ज़ोर देते हैं हो सकता है उन्हें ''दिन प्रतिदिन'' होने वाली बातें दिखाई न दें। परन्तु पौलुस को विश्वास के द्वारा पता है कि वर्तमान भी अच्छा है।

कई संघर्षों में जो कुछ प्रतिदिन हो रहा है उसी को पौलुस ने ''नया'' कहा (4:16)। इस पत्र में एक और जगह वह उस अनुभव की बात करता है, जो सब मसीही लोगों को होता है: यानी वो पल जब वे ''नई सृष्टि'' बनते हैं (5:17)। परन्तु परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा ''नया'' होने का यह पल उस एक घटना तक सीमित नहीं है। उनका ''नया होना'' जारी रहता है यानी वह वह सामर्थ जो उन्हें आगे बढ़ने के योग्य बनाती है। हमारे योगदान का यह हवाला कि ''नया होता जाता'' उस पहली बात से मेल खाता है कि परमेश्वर का सेवक ''बदलता जाता'' है (3:18)। दोनों घटनाओं में यह विश्वास मिलता है कि मसीही व्यक्ति के पास वे संसाधन और सामर्थ है जो उसे ''हियाव छोड़ने'' से रोकते हैं। वह जानता है कि ''दिन प्रतिदिन'' वह सामर्थ उसे परमेश्वर द्वारा दिए जाने वाले कामों को करने के लिए तैयार करती है।

नया नियम मसीही लोगों के जारी रहने वाले नये पन की बात करता है। रोमियों के नाम पौलुस लिखता है, ''और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, ...'' (रोमियों 12:2)। कुलुस्सियों के नाम पत्र में वह लिखता है, ''... नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है'' (कुलुस्सियों 3:10)। नया बनाना परमेश्वर का काम है न कि हमारा। जब हम विश्वास करते हैं कि सेवकाई का काम हमारे अपने संसाधनों पर निर्भर है तो हम नाकाम हो जाते हैं। जब हम मान लेते हैं कि परमेश्वर ने हमें छोड़ा नहीं है तो हम ''हियाव नहीं छोड़ते।''

पौलुस की बात में एक विडम्बना देखी जा सकती है कि ''हमारा बाहरी मनुष्यत्व तो नाश होता जाता है तौ भी हमारा भीतरी मनुष्यत्व नया होता जाता है।'' उसे यकीन है कि उसे उसी समय में नई सामर्थ मिल रही है जब उसका शरीर कमज़ोर हो रहा है। यह नई सामर्थ ''भीतरी मनुष्यत्व'' की यानी उस भाग की है जो ''नष्ट'' नहीं होता। हमारी देहों पर वे सभी कष्ट आ सकते हैं 4:8-10 में है, पर यह कमज़ोरी हमारे भीतरी मनुष्यत्व को प्रभावित नहीं करती। ''भीतरी मनुष्यत्व'' हमारा वो भाग है जो विचार करता और इच्छा करता है। रोमियों 7:22 में पौलुस ने इसकी बात की है। इफिसियों 3:16 में उसकी एक सुन्दर प्रार्थना है, ''कि वह [मसीह] अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे, कि तुम उसके आत्मा के अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ।'' पौलुस के अनुसार, सामर्थ उसकी निर्बलता में है, क्योंकि न तो पिटाई और न नींद रहित रात उस भाग की शक्ति को कम कर सके जिससे उसे काम था, यानी उस भाग को जो अनन्त काल तक रहेगा।

विरोधियों को जो पौलुस की सेवकाई की आलोचना करते थे, बेशक भीतरी व्यक्ति की सामर्थ में विश्वास करना कठिन था, जिसे देखा और नापा नहीं जा सकता। हम आमतौर पर पौलुस के विश्वास के बजाय उनकी मांगों से अधिक आराम महसूस करते हैं! कलीसिया के बुलेटिन में सामर्थ के दिखाई देने वाले चिह्नों के रूप में भीतरी संसाधनों को नहीं दिखाया जा सकता। भीतरी संसाधनों के आधार पर न हम आसानी से किसी दूसरे को यह साबित कर सकते हैं कि हमारी सेवकाइयां प्रामाणित है। पौलुस के आलोचकों की तरह हमारी इच्छा भी दिखाई देने वाले चिह्नों को देखने की होती है, जिससे हमें प्रोत्साहन मिले। सामर्थ का पौलुस अनुभवी दिखाई नहीं देता था, उसी ने उसे ''हियाव छोड़ने'' से बचाए रखा।

यदि हमें यह बहुमूल्य सबक समझ आ जाए तो हम अपनी सेवकाइयों को बिल्कुल ही नये ढंग से देखेंगे। हम वहीं से जहां हम नाकाम लगते हैं अपनी सामर्थ को ढूंढ़ने के योग्य हो जाएंगे। नाकाम लगने वाली सेवकाइयां नई सामर्थ ढूंढ़ने का अवसर होंगी। कलीसिया के कार्यक्रमों की परेशानियां हमारे लिए आत्मिक रूप में बढ़ने का अवसर होंगी। बुरा स्वास्थ्य जो हमारे विश्वास को चुनौती देता है हमारे लिए आत्मिक स्रोतों को बढ़ाने का अवसर देगा। प्रामाणिक मसीहियत ''बाहरी मनुष्यत्व'' की सफलता की नहीं बल्कि ''भीतरी मनुष्यत्व'' की सामर्थ की राह देखती है, जिसे नापा नहीं जा सकता।

हम दिलेर हैं (5:1-10)

5:1-10 में पौलुस ''दिखाई न देने वाली'' और ''सनातन'' चीज़ों का विस्तार से वर्णन करता है। उन्हें समझाने के लिए चित्रों का इस्तेमाल किया जाता है। हमारे पास अपने कमज़ोर ''तम्बू'' की जगह ''इमारत'' है। हम ''स्वर्ग से निवास'' को वैसे ही ''पहनेंगे'' जैसे हम नये कपड़े पहनते हैं (5:2)। नये निवास को पहन कर हम कभी ''नंगे'' नहीं होंगे (5:3)। शब्दों को समझना आसान नहीं है। हमारा स्वाभाविक लगाव भविष्य के जीवन की हमारी अपनी विस्तृत तस्वीर बनाने के लिए भविष्य के बारे में पौलुस के शब्दों का इस्तेमाल करने का है। पौलुस ने कई बार उस समय की अपनी आशा की बात की वह जब मसीही के पास चले जाएंगे (फिलिप्पियों 1:23)। 1 कुरिन्थियों में उसने मसीह के वापस आने की बात की जिसमें जो प्रभु के हैं, उन्हें

उसके साथ जिलाया जाएगा (1 कुरिन्थियों 15:23)। 1 और 2 थिस्सलुनीकियों में उसने प्रभु की वापसी के दिन का वर्णन विस्तार से किया। हमारे लिए यह जानने की इच्छा करना स्वाभाविक है कि यह सभी आयतें एक-दूसरे से मेल कैसे खाती हैं। हम अपने ''स्वर्ग से मिले निवास'' को कब ''पहनते'' हैं? किस अर्थ में हमें अब ये निवास हमें किस अर्थ में मिला ''है''? ''कैसे'' और ''कब'' के प्रश्न ने वर्षों से लोगों को आकर्षित किया।

पिछले दशक में हमने देखा है कि कोई विषय इतनी बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित नहीं करता जितनी यह जानने के लिए कि परमेश्वर हमारे इतिहास का समापन कैसे और कब करेगा जानने के इच्छुक लाखों लोगों को फिल्में और प्रसिद्ध पुस्तकें बांटी जाती हैं। यह सम्भावना है कि वे पौलुस से सैद्धांतिक प्रश्नों में कहीं अधिक दिलचस्पी रखते हैं। 5:1-4 में कठिन आयतों में पौलुस उसका वर्णन करने का प्रयास करता है जो वर्णन के अयोग्य हैं। वह उस कमज़ोर तम्बू जिसमें हम रहते हैं और उस निवास में जिसे परमेश्वर ने तैयार किया है बड़े अन्तर को दिखाने के लिए लिखता है। एक तो उन चीज़ों का है जो दिखाई देती हैं जबकि दूसरा अदृश्य संसार का है।

''पृथ्वी का तम्बू'' शरीर के लिए उपयुक्त रूपक है। यशायाह 38:12 राजा हिज़कियाह के बीमारी से उभरने के बारे में शब्दों को दर्ज करता है:

> मेरा घर चरवाहे के तम्बू की नाईं उठा लिया गया है; मैं ने जुलाहे की नाईं अपने जीवन को लपेट दिया है; वह मुझे तांत से काट लेगा; एक ही दिन में तू मेरा अन्त कर डालेगा।

अय्यूब उनके जो ''मिट्टी के घरों में रहते हैं'' (अय्यूब 4:19)। नश्वर और पीड़ादायक जीवन का वर्णन करता है। तम्बू का रूपक सुझाव देता है कि हमारा शारीरिक अस्तित्व कितना नश्वर है। वास्तव में पौलुस ने जीवन का वर्णन इस तम्बू में कराहने, आहें भरने और लालसा रखने से भरा होने के रूप में दिखाया है (5:2, 4)। यह ''पृथ्वी का तम्बू'' ऐसी कमजोर सामग्री से बना है कि इसका नष्ट होना पक्का है (5:1)।

पौलुस की सेवकाई की आलोचना करने वाले उस पर ध्यान दिलाते थे जिसे देखा जा सकता था यानी कराहना, आहें भरना, उसकी लालसा जो ''मिट्टी के तम्बू'' में रहता है। ''तम्बू'' को जो नष्ट होता जाता था देखकर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि उसकी सेवकाई व्यर्थ है। परन्तु पौलुस के विचार का मानक अलग है, वह कहता है, ''क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं'' (5:7)। उसने दिखाई देने वाले मानकों के अनुसार अपनी सेवकाई चलाने से इनकार कर दिया। क्योंकि उसे मालूम था कि पक्की और विश्वसनीय इमारत अन्त में नाशवान तम्बू की जगह ले लेगी। यह इमारत ''हाथों से बना हुआ घर नहीं, परन्तु चिरस्थाई'' था (5:1)। वह वर्तमान में कराहने और आहें भरने को सह सकता था क्योंकि वह ''जानता था'' (5:1) की उसे यह अनन्त निवास मिला है।

''रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलना'' (5:7) मसीही की पहचान है। पौलुस के विरोधियों की तरह हमें ''देखकर चलना'' आसान लगता है। कुछ लोग मसीही जीवन को इस प्रकार सोचने को प्राथमिकता देते हैं, जैसे इसमें ''इस संसार से बाहर'' पहले से होना शामिल हो, जिसमें चिंता और परेशानी दूर दूर तक न हो। शायद 12:2 में तीसरे स्वर्ग में पौलुस के अनुभव का हवाला संक्षेप में इसलिए लिखा गया, क्योंकि बहुत से लोग इस बात पर ज़ोर देते थे कि

मसीही जीवन ''इस संसार का नहीं'' है। 5:14 के अनुसार कहानी का एक और पहलू है। हम अभी भी स्वर्गीय घर को पहनने की राह देख रहे और ''तड़पते'' हैं। बेशक है ''विश्वास से चलते'' हैं पर हम ''बोझ से दबे कराहते रहते हैं'' (5:4)। दिखाई देने वाले चिह्नों पर आधारित विश्वास वास्तव में विश्वास है ही नहीं (तुलना रोमियों 8:24)। विश्वास में परमेश्वर पर तब भी भरोसा रखना है जब हम संसार में उसके काम के प्रमाण को देख नहीं सकते। इसमें सकारात्मक परिणाम निकलता दिखाई न देने पर भी यीशु के क्रूस को दूसरों के साथ बांटना है। प्रामाणिक मसीहियत उस लालसा को स्वीकार करना भी है जो हमारे जीवनों को उस पर बनाने से मिलती है जिसे हम देख नहीं सकते। हम जानते हैं कि अभी और बहुत कुछ बाकी है।

कोलोन, जर्मनी में एक तहखाने की दीवार पर द्वितीय विश्वयुद्ध के हिंसा और निराशा भरे समय में विश्वास का एक शानदार अंगीकार लिखा था जो वैसा ही है जैसा पौलुस ने माना था:

> मैं सूर्य में विश्वास रखता हूं, तब भी जब यह चमक नहीं रहा होता;
> मैं प्रेम में विश्वास रखता हूं, तब भी जब मैं इसे महसूस नहीं करता;
> मैं परमेश्वर में विश्वास रखता हूं, तब भी जब वह खामोश होता है।

पौलुस ने परमेश्वर पर भरोसा रखना चुना, तब भी वह जब स्वर्गीय निवास को देख नहीं सकता था।

5:1 में पौलुस कह रहा है कि ''हम जानते हैं'' कि ''हमें परमेश्वर की ओर से एक भवन मिला है,'' चाहे वह इसे देख नहीं सकता था (5:7)। उसे यकीन था कि शरीर (तम्बू) नष्ट हो जाए तो भी हम कभी ''नंगे'' नहीं होंगे, क्योंकि हम नये कपड़े ''पहन'' लेंगे (5:3)। इस नये ''कपड़े पहनने'' के लिए पौलुस तीन शब्दों का इस्तेमाल करता है। हमारे पास ''भवन'' (*oikodome*), ''घर'' (*oikia*) और ''निवास स्थान'' (*oiketerion*) मिला है। यह शब्द भावी घर के स्थायीपन और श्रेष्ठ गुण का सुझाव देते हैं। यह हमें स्मरण दिलाते हैं कि चाहे हमारी सेहत बिगड़ जाए, पर परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध कभी खत्म नहीं होता। परमेश्वर के साथ अपने भविष्य के वर्णन के लिए हम कई अलग-अलग रूपकों का इस्तेमाल कर सकते हैं, पर उन सब के पीछे एक ही सुनिश्चित बात है कि परमेश्वर ने हमें एक जीवन देने की प्रतिज्ञा की है, जिसका कभी अन्त नहीं होगा। हम एक ऐसे काम के लिए सेवा कर रहे हैं जो कभी बंद नहीं हो सकता।

सारांश

पौलुस को भविष्य के अनुमान लगाने में कोई रुचि नहीं थी, न उन सभी खाली स्थानों को भरने में कि अन्त ''कैसे'' और ''कब'' होगा। वह अपने आलोचकों को दिखाना चाहता था कि वह अपनी बिगड़ती सेहत के अलावा, परिणामों की कमी से निराश होने का हर कारण होने के बाद वह निराश क्यों नहीं हुआ। पौलुस का व्यवहार इस प्रकार था: ''सदा ढाढ़स बान्धे रहना'' (5:6; तुलना 5:8)। थोड़ी देर की कोई भी पराजय उस सेवक को निराश नहीं कर सकती जिसे मालूम थी उसे एक बड़े भविष्य की गारंटी पहले ही दी जा चुकी है। जो दृष्टिकोण यह कह सकता है कि ''हम रूप को देखकर नहीं पर विश्वास से चलते हैं,'' प्रामाणिक मसीह का चिह्न है।